स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
द्वितीय सेमेस्टर

दिनांक - 4/5/2020

बिनु गोपाल बैरिनि भई कुंजैं।

तब वै लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भई भुंजैं।
ए, ऊधौ, कहियौ माधव सौं बिरह करद करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु कौ मग जोवत अँखियाँ भई बरन ज्यौं गुंजैं।

व्याख्या :- विद्यार्थियों अबतक आपलोगों ने देखा कि गोपियाँ सूरदास की भक्ति साधना, प्रेमोपासना के वाहिका के रूप में गोपियाँ खड़ी हैं, पर आगे के पदों में आप देखेंगे कि यहाँ गोपियाँ श्रीकृष्ण के विरह में अपनी दुर्दशा का वर्णन करती हैं। इस पद में देखते हैं कि प्राकृतिक उपादान जो कृष्ण की उपस्थिति में सुखदायी लगते थे वे आज अत्यंत दुखदायी लग रहे हैं। गोपियों का कहना है कि श्रीकृष्ण के बिना वो फुलवारी, वह कुंज, वे हरी-हरी लताएँ सब के सब मेरी दुश्मन बन गयी हैं, बैरी हो गयी हैं।

15

पंगु बना दिया है आज तो चलना फिरना भी मुश्किल हो गया है हम लोगों के लिए। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ अनवरत श्रीकृष्ण का मग जोहते-जोहते अंत थक गयी हैं, लगातार देखते-देखते आँखों से आँसू निकल रही हैं। ये आँसू इतना खारा पानी भर नहीं रह गये हैं उनके आँसू के स्थान पर खून निकल रहे हैं और आँखों का रंग भी रक्तवर्ण हो गया है।

हम यहाँ इस पद की विशेषता की चर्चा भी करना चाहते हैं। इसमें प्राकृतिक उपादान का वर्णन उद्दीपन के रूप में किया गया है। विरह की विभिन्न दशाओं का वर्णन सूरदास ने परंपरागत रूप से किया है। आपने नागमति वियोग वर्णन में देखा होगा की आँसुओं के गिरने से चारों तरफ घुघुची पैदा हो गये हैं। इस पद में अनेक अलंकारों का प्रयोग भी सफलता पूर्वक किया गया है। चाहे मानवीकरण अलंकार हो या

उपमा, जो रूपक अलंकार उसका अत्यन्त सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं यह एक महत्वपूर्ण पद है।

कुमार रजनीकान्त हंस
5/5/2020

5-5-2020